Gr – मैं जगत की ज्योति हूं युहन्ना ८:१२-२० | 1

– Save This Page as a PDF–

मैं जगत की ज्योति हूं

युहन्ना ८:१२-२०

खुदाई: महिलाओं के दरबार में रोशनी का विचार कहां से आया? यूहन्ना ८:१२ में यीशु वास्तव में क्या दावा कर रहा है? वादा क्या है? प्रकाश और अंधकार से मसीहा का क्या मतलब है? प्रभु किससे अपना दावा मजबूत करते हैं (यूहन्ना ५:३१-४० देखें)? इससे क्या फर्क पड़ता है कि मसीह जानता है कि वह कहाँ से आता है (यूहन्ना ८:१४, २१-२३ देखें यूहन्ना ७:४१-४२)? योचनन ८:१९ में फरीसियों की गलतफहमी पिता के साथ उनके रिश्ते के बारे में क्या प्रकट करती है?

चिंतन: येशुआ का अनुसरण करना आपके लिए अंधेरे में रोशनी वाले किसी व्यक्ति का अनुसरण करने जैसा कैसे रहा है? आप जिन लोगों को जानते हैं वे मसीह को कैसे गलत समझते हैं? उनका जीवन किस प्रकार अंधकार का उदाहरण है? आप उनके लिए अंधेरे में चमकती रोशनी का जीवंत उदाहरण कैसे बन सकते हैं? ठीक उन्हीं शब्दों का उपयोग किए बिना, क्या आप किसी अविश्वासी को समझा सकते हैं कि प्रभु आपके जीवन को कैसे रोशन करते हैं?

फरीसियों द्वारा व्यभिचार में पकड़ी गई महिला को उनके पास लाने में रुकावट के बाद, यीशु ने उस सुबह भीड़ को पढ़ाना जारी रखा। इस खंड में मसीह के शब्द स्पष्ट रूप से युहन्ना ८:१-११ के दृश्य को संदर्भित करते हैं। यह बूथों के त्योहार के आठवें दिन को जारी रखा, जिसका उल्लेख टोरा (लैव्यव्यवस्था २३:३६, ३९; गिनती २९:३५) में किया गया है। यह वास्तव में एक अलग दावत का दिन माना जाता था। इस दावत को रब्बीनिक हिब्रू में शेमिनी ‘अत्जेरेट’ कहा जाता है, जिसका लगभग मतलब आठवें दिन की उत्सव सभा है। यह भवन का पर्वत पर बिना किसी नियमित कार्य के सब्त के विश्राम के साथ मनाया जाता था।

सुक्कोट के त्योहार के पहले दिन की समाप्ति

पर उपासक महिलाओं के दरबार में चार विशाल दीपस्टैंड (देखें एनसी२ – महिलाओं का दरबार) देखने के लिए आकर्षित हुए, जिनमें से प्रत्येक सत्तर फीट ऊंचा था। प्रत्येक दीवट में दीपकों के लिए चार कटोरे थे, प्रत्येक में नौ लीटर जैतून का तेल से भरे सोलह कटोरे थे, और उनके सामने चार सीढ़ियाँ टिकी हुई थीं। शाम के समय चार कनिष्ठ पुजारी सीढ़ियों पर चढ़ते थे, प्रत्येक के हाथ में छत्तीस लीटर जैतून का तेल वाला एक घड़ा होता था, और दीवट जलाते थे। जाजकों के पुराने, घिसे-पिटे कपड़े दीपक के लिए बाती के रूप में काम करते थे। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ये दीपक दिसंबर में लगातार आठ ठंडी रातों के दौरान हनुक्का, या रोशनी के त्योहार पर भी जलते थे। देर से यहूदी धर्म की एक संस्था के रूप में, हनुक्का, विभिन्न मामलों में, जानबूझकर बूथ के त्योहार पर आधारित था, जो एडोनाई के सात त्योहारों में से आखिरी था (लैव्यव्यवस्था २३:३३-४३)।

महिलाओं के दरबार में रोशनी का विचार कहां से आया? इस निर्देश का तोराह में कोई उल्लेख नहीं है। यह इस तथ्य से आता है कि पहला मंदिर (सुलैमान का मंदिर) बूथ के त्योहार पर अपने समर्पण के अवसर पर, शकीना महिमा से भरा हुआ था (मेरी टिप्पणी देखें यशायाह Ju– प्रभु की महिमा आपके ऊपर उठती है)। रात में इस बादल को आग के स्तंभ के रूप में देखा जा सकता है (निर्गमन १३:२१-२२; गिनती १४:१४)। जब प्रथम मंदिर का काल बूथों के त्योहार के साथ शुरू हुआ, तो शकीना की रोशनी ने रातों को रोशन कर दिया। हालाँकि, दूसरे मंदिर में, शकीना की कोई महिमा नहीं थी। मंदिर के भीतर विदेशी मूर्तियों की पूजा करने के परिणामस्वरूप, शकीना चला गया था (यहेजकेल १०:३-५, १८-१९ और ११:२२-२३)। परिणामस्वरूप, महिला न्यायालय में इसके प्रतिस्थापन के रूप में रोशनी स्थापित की गई।

यरूशलेम की शरद ऋतु की रातों के अंधेरे में मंदिर के दीपक उत्सव की रोशनी दे रहे थे। सुक्कोट के दौरान हर रात, हसीदीम, या धर्मपरायण लोग, अपने हाथों में जलती हुई मशालें लेकर प्रभु के सामने नृत्य करते और खुशी के भजन गाते थे। और लेवी, वीणा, सारंगी, झांझ, तुरही और अनगिनत संगीत वाद्ययंत्रों के साथ, निकानोर फाटक के सामने पंद्रह सीढ़ियों पर खड़े हो गए (देखें एनबी – निकानोर फाटक), और भजन में आरोहण के गीत गाए। फिर पूरी रात भोर तक, रब्बी सिखाते हैं कि यरूशलेम में एक भी घर ऐसा नहीं था जिसे भवन का पर्वत से प्रकाश का लाभ न मिला हो।

ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि मंदिर की इस रोशनी को उसी प्रतीकात्मक अर्थ के रूप में माना जाता था, जैसे पानी का गिरना (देखें Gp– पर्व के अंतिम और महानतम दिन)। मंदिर से चारों ओर के अंधेरे में चमकने वाली रोशनी, और यरूशलेम के हर हिस्से को रोशन करने का उद्देश्य न केवल शकीना की महिमा का प्रतीक रहा होगा जो एक बार मंदिर में भर गया था, बल्कि उस महान प्रकाश का प्रतीक था, जिसके साथ चलने वाले लोग थे अंधकार में देखना था (यशायाह ९:२ और ६०:१-३), और जो उन पर प्रकाश डालना था जो मृत्यु की छाया की भूमि में रहते हैं (भजन २३:४ एनएएसबी)। हालाँकि, समस्या यह थी ईसा मसीह के जीवन के दौरान रब्बियों ने, विशेष रूप से यहूदी सर्वोच्च न्यायालय –

महान महासभा के रब्बियों ने सिखाया कि दुनिया का प्रकाश उनका शीर्षक था क्योंकि उनके पास टोरा पर आधारित न्यायिक निर्णयों के माध्यम से पृथ्वी पर दिव्य प्रकाश फैलाने का कार्य था।

लेकिन इसके अर्थ पर कोई संदेह नहीं रह गया, जब यीशु ने लोगों से दोबारा बात की और कहा: जगत की ज्योति मैं हूं (यूहन्ना ८:१२ए)। इस वाक्य में सर्वनाम “मैं” पर बल दिया गया है। यह मसीह के सात आई एम् (मैं) (यूहन्ना ६:३५, १०:७, १०:११, ११:२५, १४:६, १५:१) में से दूसरा है। इस अभिव्यक्ति का उपयोग विरोधाभास व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है। यह ऐसा था मानो प्रभु कह रहे हों, “मैं, मेशियाक, दुनिया की रोशनी हूं, न कि फरीसी जो सच्चाई और न्याय से दूर हो गए हैं, जो टोरा का पालन न करने पर एक महिला को पत्थर मारकर मारने के लिए तैयार थे।” , और यह उस रवैये के साथ जिसने इज़राइल के मसीहा को अस्वीकार कर दिया।

जो कोई मेरे पीछे हो लेगा, वह कभी अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। इतना व्यापक दावा अनुत्तरित नहीं रह सकता। येशुआ को फंसाने में अपनी आखिरी विफलता से क्रोधित होकर, फरीसियों ने उसे चुनौती दी। उन्होंने स्वयं को मुख्य प्रश्न पर संबोधित नहीं किया। वास्तव में, वे प्रकाश और अंधकार के बारे में बिल्कुल भी बात नहीं करते हैं। और यहां उन्होंने कहा: यहां आप अपने स्वयं के गवाह के रूप में प्रकट हो रहे हैं; आपकी गवाही सच्ची नहीं है (योचनान ८:१२बी-१३)। अपनी स्वयं की गवाही को ध्यान में रखते हुए, प्रभु ने टोरा से सिद्धांत का उल्लेख किया। अकेले एक गवाह किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार के अपराध या पाप के लिए दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं होगा; मामला तभी स्थापित होगा जब दो या तीन गवाह उसके खिलाफ गवाही देंगे (व्यवस्थाविवरण १९:१५ सीजेबी)। उनकी दूसरी गवाही स्वर्ग में उनके पिता की गवाही थी (देखें Bi– यीशु का बपतिस्मा)। रब्बियों ने सिखाया कि जब परमेश्वर स्वर्ग में बोलते हैं, “उनकी आवाज़ की बेटी” बैट-कोल, या एक प्रतिध्वनि, पृथ्वी पर सुनी जाने वाली एक श्रव्य आवाज़ है। आख़िरी भविष्यवक्ताओं के बाद, यह सोचा गया कि ईश्वर ने लोगों को मार्गदर्शन देना जारी रखने के लिए बैट-कोल प्रदान किया (ट्रैक्टेट योमा ९बी)। यह दिलचस्प है कि बैट-कोल ने आखिरी भविष्यवक्ता के बाद और ब्रित चादाशाह की स्थापना से पहले गवाही दी थी कि यीशु वास्तव में उनके पुत्र हैं और इस प्रकार, मसीह हैं।

हालाँकि, उसकी अपनी गवाही विश्वसनीय थी, क्योंकि येशुआ कोई यहूदी नहीं था – वह यहूदियों का राजा था। येशुआ ने उत्तर दिया: भले ही मैं अपनी ओर से गवाही दूं, मेरी गवाही मान्य है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं (यूहन्ना ८:१४ए)। मीका ५:२ के अनुसार मसीहा न केवल बेथलहम में एक मनुष्य के रूप में पैदा होगा, बल्कि उसकी उत्पत्ति प्राचीन काल से, प्राचीन काल से है (दानिय्येल ७:९-२२)। वह न केवल स्वर्ग से आएगा, जो अंततः उसकी दिव्यता का प्रमाण है, बल्कि इसके अलावा, वह वहीं लौटेगा। उन्होंने एक से अधिक बार और अलग-अलग तरीकों से कहा: मैं जाऊंगा और अपने स्थान पर लौटूंगा, जब तक कि वे अपना अपराध

स्वीकार नहीं कर लेते और मुझे खोजते हैं, अपने संकट में उत्सुकता से मुझे ढूंढते हैं (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशितवाक्य Ev– दूसरे आगमन का आधार) ईसा मसीह का)। परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ या कहाँ जा रहा हूँ (योचनन ८:१४बी)। तो इसके बावजूद कि फरीसियों ने सोचा था कि वे यीशु के बारे में जानते हैं, वे उसकी स्वर्गीय उत्पत्ति और नियति से अनभिज्ञ थे, और इस प्रकार उसका न्याय करने में असमर्थ थे।

तुम मानवीय मापदण्डों के आधार पर निर्णय करते हो; मैं किसी पर निर्णय नहीं देता (यूहन्ना ८:१५)। यहां, मसीहा व्यभिचार में पकड़ी गई महिला के मामले में निंदनीय दोहरे मानकों का उल्लेख करते हैं (देखें Gq– व्यभिचार के कार्य में पकड़ी गई महिला)। व्यभिचारिणी को प्रभु ने दिखाया था कि वह उस समय न्याय करने नहीं आया था। अपने प्रथम आगमन में, वह परमेश्वर के मेम्ने के रूप में आया, जो संसार के पापों को दूर ले जाता है (योचनान १:२९); हालाँकि, अपने दूसरे आगमन में, वह पापी दुनिया पर फैसला सुनाने के लिए यहूदा जनजाति के शेर के रूप में आएगा।

लेकिन यदि मैं निर्णय करता हूँ, या इससे भी बेहतर, जब मैं निर्णय करता हूँ, तो मेरे निर्णय सत्य होते हैं, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। मैं उस पिता के साथ खड़ा हूं, जिसने मुझे भेजा है। यह देवता का पूरा दावा था। इसने पिता के साथ पुत्र की पूर्ण एकता की पुष्टि की। यह कथन उसके द्वारा बाद में दिए गए कथन के समान है: पिता और मैं एक हैं (यूहन्ना १०:३०)। वह यहां युहन्ना ८ में दिव्य ज्ञान के बारे में बात करते हैं जो पिता और पुत्र के लिए सामान्य है। ऐसा होने पर, उसका निर्णय सत्य के अलावा कुछ भी कैसे हो सकता है (योचनान ८:१६)?

आपके अपने तौरात में लिखा है कि दो गवाहों की गवाही सच्ची है। मैं वह हूं जो अपने लिये गवाही देता हूं; मेरा दूसरा गवाह पिता है, जिसने मुझे भेजा (यूहन्ना ८:१७-१८)। यहाँ मसीह दूसरे तरीके से वही दोहराते हैं जो उन्होंने अभी-अभी पुष्ट किया था। तब धर्मगुरुओं ने यह कह कर उसे चिढ़ाया: तेरा पिता कहां है (यूहन्ना ८:१९ए)? वे उसके जन्म की स्पष्ट परिस्थितियों को जानते थे, और वे जानते थे कि यूसुफ मर चुका था। लेकिन यीशु ने अपमान को नजरअंदाज कर दिया और फटकार के साथ जवाब दिया। जो कोई भी यह विश्वास करता था कि यूसुफ ने येशुआ को जन्म दिया था, वह स्पष्ट रूप से प्रभु के वास्तविक पिता की पहचान नहीं जानता था। इसलिए, उन्होंने कहा: तुम मुझे या मेरे पिता को नहीं जानते। हालाँकि वे मौखिक ब्यबस्था के ईमानदार पर्यवेक्षक थे (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था), फरीसियों का व्यक्तिगत स्तर पर एडोनाई से कोई संबंध नहीं था। और क्योंकि वे उसे नहीं जानते थे, उन्होंने उसके पुत्र को नहीं पहचाना। यीशु ने उत्तर दिया। यदि आप मुझे जानते हैं, तो आप मेरे पिता को भी जानते होंगे (योचनान ८:१९बी), क्योंकि यीशु पिता का आदर्श प्रतिनिधित्व थे।

यीशु ने ये शब्द स्त्रियों के आँगन में, उस स्थान के पास, जहाँ भेंटें रखी जाती थीं, उपदेश देते समय कहा था (यूहन्ना ८:२०ए)। इसे यह नाम मिला, इसलिए नहीं कि यह

विशेष रूप से महिलाओं के लिए था, बल्कि इसलिए कि उन्हें बलि के उद्देश्यों को छोड़कर, आगे बढ़ने की अनुमति नहीं थी। वास्तव में, यह संभवतः पूजा के लिए सामान्य स्थान था, यहूदी परंपरा के अनुसार, महिलाएं दरबार के तीन किनारों पर केवल एक ऊंची गैलरी पर कब्जा करती थीं। यह अदालत २०० वर्ग फुट के क्षेत्र में फैली हुई थी। चारों ओर एक साधारण स्तंभ था, और उसके भीतर, दीवार के सामने, भेंट के लिए तेरह संदूक, या “तुरही” रखे गए थे। तेरह संदूकें मुंह पर संकीर्ण और नीचे चौड़ी थीं, जिनका आकार तुरही जैसा था, इसलिए यह नाम पड़ा। उन्हें विशिष्ट भेंट के लिए चिह्नित किया गया था। नौ दशमांश के लिए थे, और तीन दशमांश से ऊपर स्वैच्छिक भेंट के लिए थे। निःसंदेह, मंदिर का खजाना एक व्यस्त स्थान होगा, जहाँ उपासकों का आना- जाना लगा रहता होगा। उपदेश देने के लिए धर्मनिष्ठ लोगों की भीड़ एकत्र करने के लिए इससे बेहतर कोई जगह नहीं होगी।

तुरही गिनती तीन उन महिलाओं के लिए थी जिन्हें होम और पाप बलि के लिए कबूतर के बच्चे लाने थे। वे अपने समतुल्य धनराशि छोड़ देते थे, जिसे प्रतिदिन निकाला जाता था और उतनी ही गिनती में कबूतर के बच्चे चढ़ाए जाते थे। इससे न केवल कई अलग-अलग बलिदानों का श्रम बच गया, बल्कि उन लोगों की विनम्रता भी बच गई जो नहीं चाहते होंगे कि उनकी भेंट का कारण सार्वजनिक हो। इस तुरही में, यीशु की माँ मरियम ने अपनी भेंट अर्पित की होगी (देखें Au– मंदिर में प्रस्तुत यीशु)।

फिर भी किसी ने उसे नहीं पकड़ा, क्योंकि, जैसा कि युहन्ना ने बार-बार बताया, उसका समय अभी तक नहीं आया था (योचनान ८:२०बी)। यह स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि मसीहा ने जो कहा था उससे फरीसी क्रोधित थे, और यदि यह संभव होता तो उन्होंने उसे वहीं मार डाला होता। लेकिन वह अपने समय में अपनी इच्छा पूरी करने के लिए पिता की समय सारिणी पर काम कर रहा था (यूहन्ना २:४, ७:६ और ३०, १२:२३ और २७, १३:१, और १७:१)।

येशुआ और फरीसियों के बीच यह आदान-प्रदान हमें खुद से यह पूछने के लिए प्रेरित कर सकता है कि हम पापियों के उद्धारकर्ता और, उसके माध्यम से, पिता को कितनी अच्छी तरह जानते हैं। क्या प्रभु हमारे जीवन का प्रकाश हैं? क्या हम उसके प्रकाश के प्रति खुले हैं? हम सभी अपने जीवन के कुछ हिस्सों को उसकी रोशनी से दूर रखने के लिए प्रलोभित हैं – उसकी रोशनी को एक क्षेत्र में चमकने देने के लिए, जैसे शब्बत या रविवार की पूजा, जबकि अपने सप्ताह के बाकी दिनों को उसकी चमक के लिए बंद कर देना। एक सच्चे आस्तिक के लिए दुनिया में रहना बहुत जल्दी बूढ़ा हो जाता है। लेकिन इससे भी अधिक, हम उन सभी चीज़ों को गँवा देने का जोखिम उठाते हैं जो ईश्वर हमारे दैनिक जीवन में कर सकता है। पवित्र आत्मा के वास के माध्यम से, प्रभु हर दिन, हर पल हमारे साथ हैं। एल-गिबोर, शक्तिशाली ईश्वर, जिसने हमें छुटकारा दिलाया है, उन जंजीरों को तोड़ना चाहता है जो हमें बांधती हैं – भय, चिंता और लत की जंजीर। उसकी चकाचौंध रोशनी जहां भी चमकेगी वहां अंधेरा दूर कर देगी। आइए अपना दिल उसके लिए खोलें।

यीशु, मैं चाहता हूं कि मेरा जीवन आपकी रोशनी को प्रतिबिंबित करे। मेरे जीवन के हर कोने में अपनी रोशनी चमकाओ। मुझे अपनी शांति और आनंद से भरें, ताकि अन्य लोग आपका प्रकाश देख सकें और परमेश्वर को महिमा दे सकें।